CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

069
क भ

3691

कला विभाग

भारतीय संग्रहालय

कलकत्ता

संक्षिप्त मार्ग-दर्शिका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

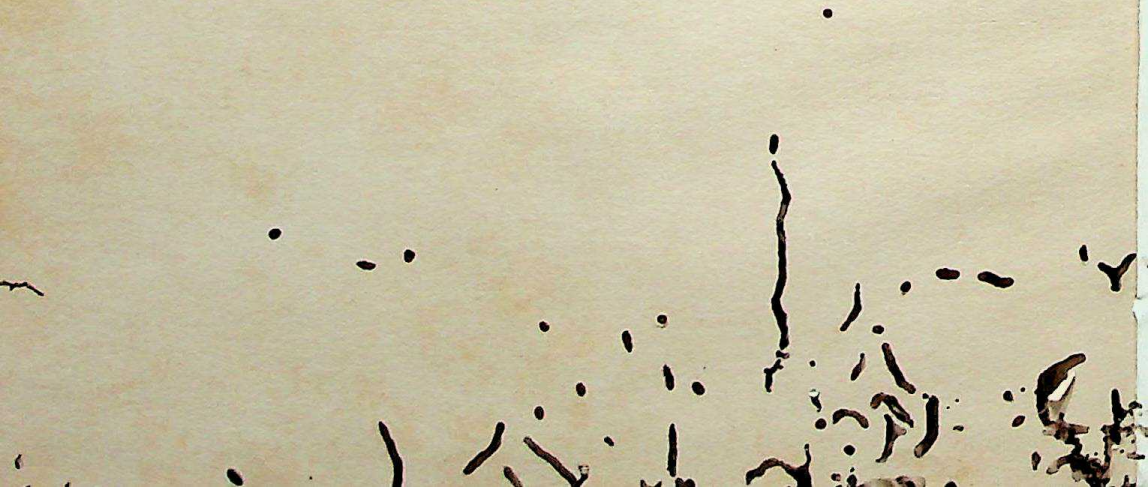

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भ्रिकुटी (सुनहला) : तिब्बत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला विभाग

भारतीय संग्रहालय

संक्षिप्त मार्ग-दर्शिका

प्रणेता

चिन्तामनि कर व तीनकड़ि मुखर्जी

कलकत्ता

१९६४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

०६१
क ह

अनुवाद

अमल सरकार

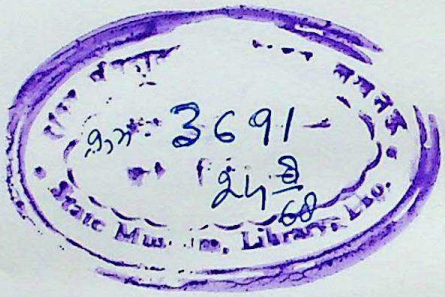

भारतीय संग्रहालय के बोड आफ ट्रष्टीज़ द्वारा प्रकाशित
व पुराण प्रेस, कलकत्ता ४ द्वारा मुद्रित ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

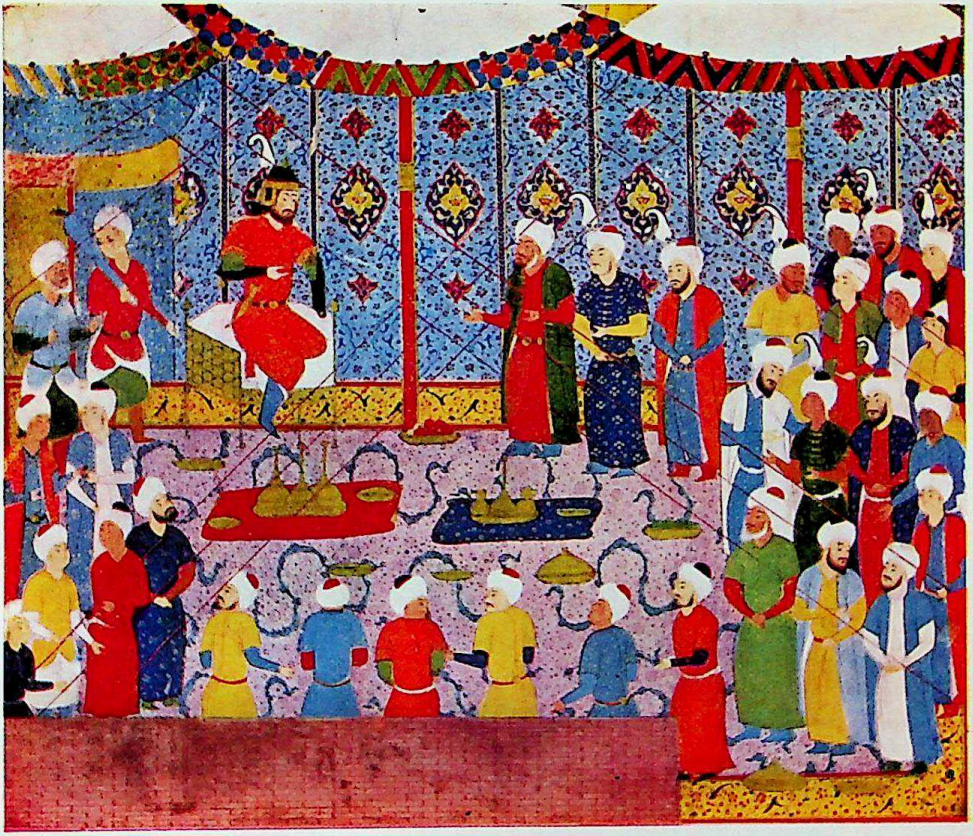

दरबार-दृश्य : पारसिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मन्दिर-पताका : तिब्बत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता के कला-विभाग के दो विशेष कक्ष हैं—(१) चित्र-प्रदर्शन का कक्ष और (२) बुने हुए कपड़े व दूसरे शिल्प-वस्तुओं का प्रदर्शन-कक्ष।

चित्र-प्रदर्शन का कक्ष

संग्रहालय के मुख्य भवन के चौरंगी संयोजित भाग के सर्वोच्च तल्ले में यह कक्ष स्थित है। पानी मिलाकर लगाने के रंग तथा टेम्पेरा (मिश्रित रंग) के चित्र व चित्रांकन इस कक्ष की विशेषता है और इन्हें साधारणतया दो श्रेणियों में रखा गया है—(क) तिब्बत की मन्दिर-पताकाएँ (टंका) एवं (ख) पारसिक तथा भारतीय रीति के चित्र व चित्रांकन।

तिब्बती मन्दिर-पताकाए (टंका)

कई पताकाएँ कक्ष में प्रदर्शित की गयी हैं जिनमें कुछ काग़ज़ या कपड़े से लिपटी हुई हैं और जिनकी भूमि पर 'टेम्पेरा' में चित्रों का सम्पादन किया गया है। कुछ पताकाएँ फिर रेशम तथा कसीदे के काम से बनायी गयी हैं। लामा-धर्म के देव-देवियों की कथाएँ इन पताकाओं के विषय हैं; यह लामा-धर्म शैव रहस्यवाद, इन्द्रजाल, महायान बौद्ध-धर्म एवं तिब्बती-भारतीय पिशाच-पूजन का मिश्रीकरण है। इस धर्म में प्रोत्साहित होकर जिन व्यक्तियों ने महान कामों के द्वारा अपने को सुप्रतिष्ठित किया है उन्हें भी कभी-कभी अपनी स्त्रियों के साथ दैव-लक्षण में विभूषित होकर इन पताकाओं में स्थान मिला है। इसी कारण तिब्बत के राजा व रानियाँ, मन्त्री व धर्मयाजकों को इन पताकाओं में अंकित किया गया है, और जभी तो लामा-धर्म के सच्चे सेवक तिब्बत के राजा श्रंग-ट्सन-गाम्पो ने अवलोकितेश्वर के अवतार बनकर पताकाओं में अपना स्थान प्राप्त कर लिया है। उनकी चीनी रानी को 'श्वेत तारा' के रूप में और नेपाली रानी को 'हरित तारा' के रूप में देवता-तुल्य बनाया गया है। भारत से लाये गये शैव व तन्त्र-धर्म के देवताओं को भी इन पताकाओं में स्थान मिला है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिब्बती देवताओं के मन्दिरों में पिशाच व उनकी शक्तियाँ भी और देवताओं के बराबर ही पूजे जाते हैं, इसका कारण तो यह है कि तिब्बती लोगों को विश्वास है कि ये सब पिशाच-देवता अलौकिक शक्ति के अधिकारी होते हैं। अपने-अपने शस्त्रों से शोभित करके उन देवताओं को इस प्रकार अंकित किया गया है कि चित्रों को देखने से भय का उत्पन्न होता है।

खगोल-विद्या और शरीर-रचना-शास्त्र सम्बन्धी कई पताकाएँ इस कक्ष की और एक विशेषता है।

जो इन पताकाओं से वाकिफ़ नहीं हैं उनके लिए ये निरी कल्पना के सिवाय और कुछ नहीं है लेकिन जिन्होंने इनके प्रतीक व अर्थ को समझ लिया है उनके लिए ये अनन्त कुतूहल का भण्डार जैसा है।

पारसिक व भारतीय रीति का चित्र व चित्रांकन

इस श्रेणी की प्रदर्शित वस्तुओं में हाथों बने काग़ज़ पर सम्पादित चित्रांकन व चित्रों का संग्रह मुख्य है। अठारहवीं शती की राजपूत शाखा के काग़ज़ पर अंकित कई बड़े-बड़े चित्र भी हैं जो 'कार्टून' के नाम से परिचित हैं। दीवारों पर चित्रांकन के लिए इन चित्रों से अक्स खींचने के काम किये जाते थे। पारसिक, भारतीय-पारसिक, दक्षिणी, राजस्थानी, पहाड़ी, सिक्ख, पटना आदि विभिन्न शाखाओं को दिखाने के लिए अनेक चित्रों का समावेश किया गया है; इसके अलावा मुग़ल दरबार तथा राजपूत रागिणी सम्बन्धी (चित्र के माध्यम से संगीत का विश्लेषण) चित्रों का संग्रह इस कक्ष का विशेष आकर्षण है। ख़ुरासान के अकुआ रिज़ा, उस्ताद मनसूर, नान्हा, गुलाम आदि विख्यात कलाकारों के अनुपम चित्र इसी स्थान में प्रदर्शित किये गये हैं। भारत के राजे-महाराजे व दरबारियों की कई ऐसी तसवीरें हैं जिनका काफ़ी ऐतिहासिक मूल्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

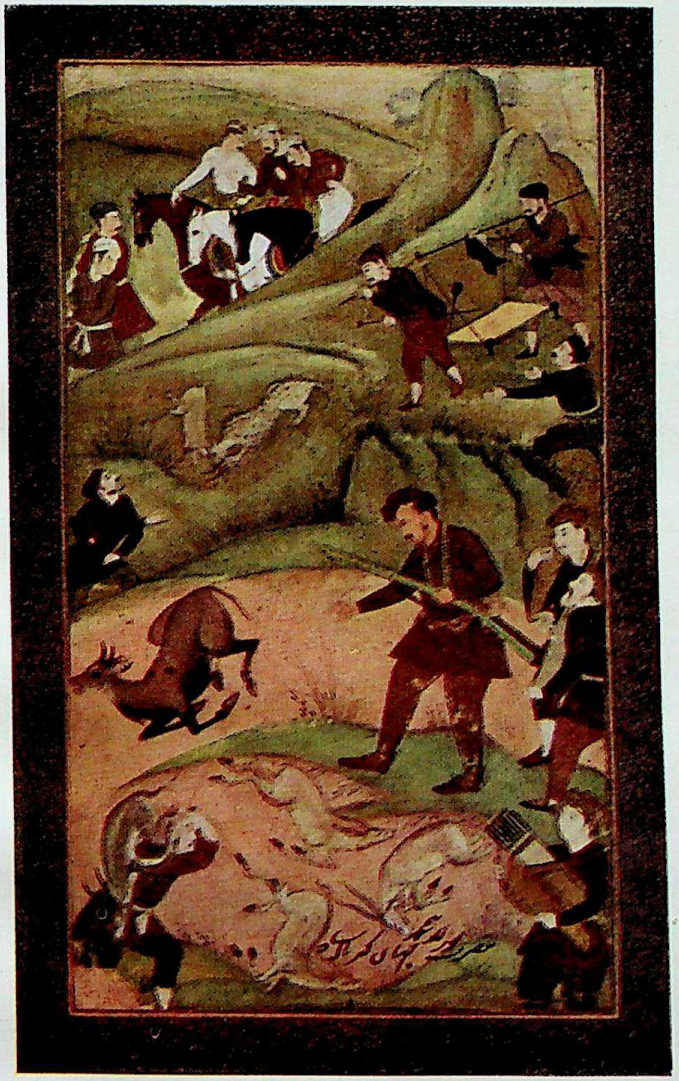

जहांगीर द्वारा हिरण-शिकार : मुगल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस कक्ष में मुग़ल-शाखा के चित्रों का जो विराट संग्रह है उसकी कथावस्तु में अपनी निजी विशेषता पायी जाती है। पहाड़ी व राजस्थानी शाखा के चित्रों में पौराणिक विषय एवं श्रीकृष्ण की जीवन-कथाओं का ही बारबार वर्णन हुआ है। प्रेम-सम्बन्धी दृश्यों को लेकर मर्त-जगत के साधारण नर-नारियों के जीवन की घटनाओं का भी समावेश किया गया है। ये चित्र हमें पन्द्रहवीं शती से लेकर उन्नीसवीं शती तक के भारतीयों का रहन-सहन, वेश-भूषा तथा उनके राजगृह तथा समाज के जीवन से परिचय करा देते हैं।

संग्रहीत चित्रों मे से जो विशेष उल्लेखनीय हैं नीचे उनकी एक सूची दी जा रही है :—

प० स० १५९ फूल लेकर कोई कुलीन पुरुष खड़े हैं (पारसिक)—१७ ई० शती—चित्र, रंगा हुआ, ११ × ५$\frac{१}{२}$″

प० स० १४९६२ दरबार का दृश्य (पूर्व-मुग़ल)—१६वीं सदी—चित्र, रंगा हुआ, ११$\frac{१}{२}$ × ९$\frac{१}{२}$″

प० स० ५४१ शाहंशाह अकबर एक बाज़ पक्षी लिये हुए हैं और पिता के सन्मुख बादशाह जहाँगीर खड़े हैं—उल्टी तरफ़ राज्य-सम्बन्धी मुहर-चिह्न (मुग़ल, पूर्व-जहांगीर काल)—चित्र, रंगा हुआ, ५$\frac{५}{८}$ × ३$\frac{५}{८}$″

प० स० ३० अमरसिंह के पुत्र सुरजमल की तसवीर (मुग़ल)—लगभग १६२५ ई० में अंकित। इसमें जहांगीर की मुहर तथा फारसी भाषा में एक संक्षिप्त लेख है—"नान्हा द्वारा अंकित अमरसिंह के पुत्र सुरजमल की तसवीर"—चित्र, रंगा हुआ, १० × ७″

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौलवी सम्मेलन : मुग़ल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प० स० ३५५ 'एक तेजस्वी घोड़े पर सवार हुए युवराज दारा शिको की तसवीर' (मुग़ल)—लगभग १६३५ ई. के समीप अंकित। चित्र, रंगा हुआ, १२½ × ८⅝"

प० स० ८ बी हाथी की पीठ पर युवराज मुहम्मद मुराद, गुलाम द्वारा अंकित (मुग़ल)—इसमें एक पारसिक लेख नज़र आता है जिसमें लिखा है—"१०३० (१६२१ ई०) में गुलाम द्वारा अंकित इक़बाल नामक हाथी की पीठ पर शाहजहाँ का पुत्र युवराज मुहम्मद मुराद।" काले व लाल रंग का किस प्रकार उपयोग किया गया है यह देखने योग्य है, ९½ × ६⅜"

प० स० ३१६ सम्राट जहांगीर एक शेर मारने को उतारू हैं। लगभग १६२३ ई० में अंकित। यह सम्राट जहांगीर के अपने जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव का लेख-प्रमाण (रेकार्ड) है जिसका उन्होंने अपने जीवन-इतिहास में उल्लेख किया है—'यह सचमुच बड़ी ही स्पष्ट रचना है और दरबार के कलाकार ने इस दृश्य के मूल तात्पर्य को समझ लिया है।' (मुग़ल)—चित्र, रंगा हुआ, १५½ × ९½"

प० स० १८८ शेर को गोली मारने के समय सम्राट जहांगीर का बाल-बाल बच जाना। लगभग १६२३ ई० में अंकित। जहांगीर ने खुद बताया है कि यह उनके युवराज रहने के समय एक साहसिक कार्य है। (मुग़ल)—चित्र, रंगा हुआ, १३ × १०½"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प० स० २१० उस्ताद मनसूर द्वारा अंकित तुर्की मुर्ग़ा (मुग़ल)—लगभग १६१२ ई. शती। इसमें जहांगीर की मुहर नज़र आती है। अपनी आत्मकथा में जहांगीर ने इस मुर्ग़ा के बारे में उत्तेजक विवरण दिया है। चित्र, रंगा हुआ, १० × ७″

प० स० ६३८ सम्राट जहांगीर व योधाबाई पेड़ के नीचे खड़े हुए हैं (मुग़ल)—१८वीं सदी। चित्र, रंगा हुआ, १०×७″

प० स० १४०६१ सम्राट शाहजहाँ के द्वितीय पुत्र युवराज सूजा (मुग़ल)—लगभग १६५० ई०। चित्रांकन, ७$\frac{१}{२}$×५″

प० स० ३८० कोई मुग़ल युवराज खड़े हुए हैं (मुग़ल)—१७वीं सदी। चित्र, रंगा हुआ, ११$\frac{१}{२}$×७″

प० स० २१३ रात में हिरन-शिकार (मुग़ल)—उत्तर १७ ई० शती। चित्र, रंगा हुआ, ११$\frac{१}{२}$×८$\frac{१}{२}$″

प० स० ४८३ घोड़े पर सवार कोई युवराज (सम्भवतः अकबर) कुएँ से पानी पी रहे हैं (मुग़ल)—चित्र, रंगा हुआ, १२$\frac{३}{४}$×९$\frac{३}{४}$″

प० स० २८३ किसी चबूतरे पर फीके पीले रंग के गलीचे पर बैठे हुए दो युवक (मुग़ल)—चित्र, रंगा हुआ, ७$\frac{३}{४}$×६″

प० स० १४८७७ तीन रमणियाँ किसी फकीर से मिल रही हैं (पूर्व मुग़ल)—चित्र, रंगा हुआ, १०$\frac{५}{४}$×८$\frac{५}{४}$″

प० स० १३०३१ रात्रि-दृश्य—मालवी सम्मेलन (पूर्वी मुग़ल)—चित्र, रंगा हुआ, १२$\frac{३}{४}$×८$\frac{३}{४}$″

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

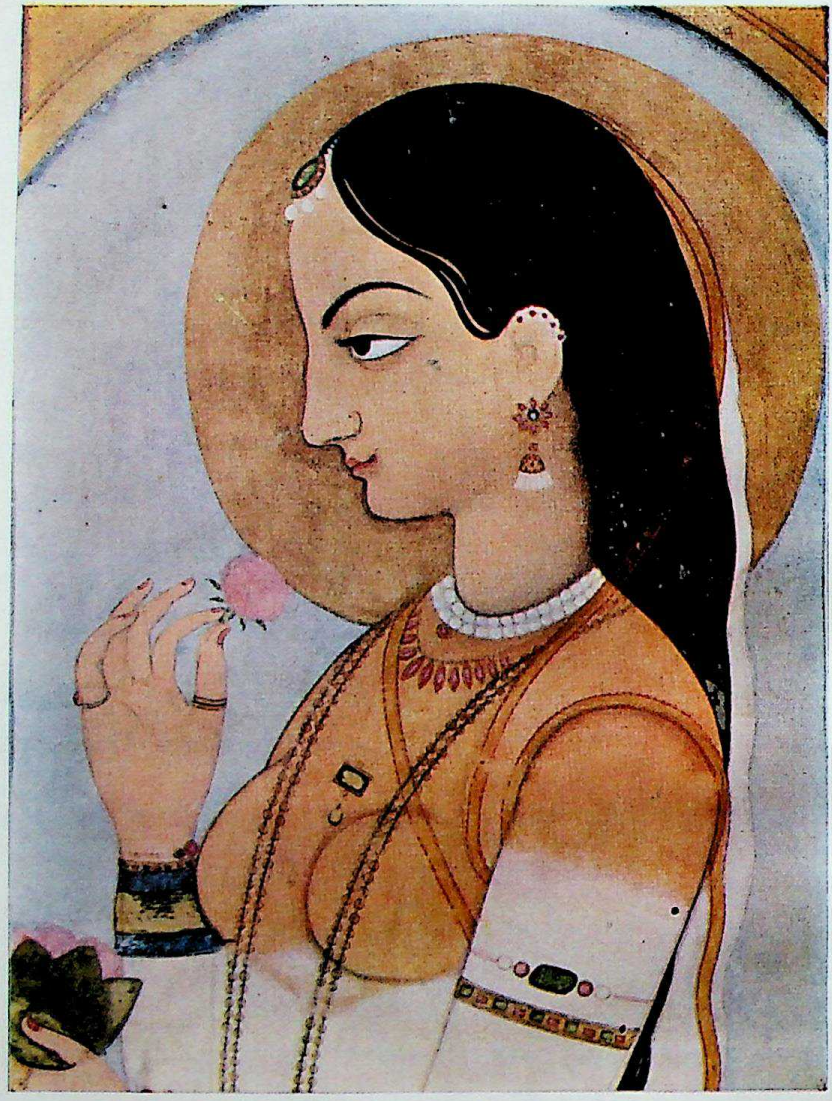

राधा : कांगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प० स० ३३९ कोई रमणी तैरती हुई अपने प्रेमिक के पास जा रही है—इसमें पंजाब की एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा का वर्णन किया गया है—(मुग़ल) १८वीं सदी। चित्र, रंगा हुआ, ११ × ८′

पहले ही कहा गया है कि इस कक्ष में कई ऐसे चित्रों का संग्रह है जो रागमाला नाम से परिचित हैं और जिनसे हम भारतीय संगीत-रचना के विभिन्न भागों को समझ सकते हैं।

पश्चिम हिमालय के पहाड़ी राज्यों तथा राजस्थान के कलाकारों के कई उत्कृष्ट चित्रों ने इस कक्ष की शोभा और भी बढ़ा दी है। इन दोनों शाखाओं के कई सुन्दर चित्रों की सूची नीचे दी जा रही है:—

प० स० १४१४७ गुलाब का फूल हाथ में लिये श्री राधिका की तसवीर (कांगरा)—उत्तर १८वीं सदी। चित्र, रंगा हुआ, ७$\frac{5}{8}$ × ५$\frac{5}{8}$″

प० स० २५० शिविर में आग के चारों ओर यात्रियों का एक दल (मुग़ल-राजपूत)—पूर्व १८ ई० शती। चित्र, रंगा हुआ, ६ × ४$\frac{3}{4}$″

प० स० १३२८३ वगीचे के पोखर में नहाती हुई रमणियाँ (कांगरा)—चित्र, रंगा हुआ, ९ × ६″

प० स० ३६४ शिवजी का सायं-नृत्य—श्रेणी-बद्ध हिमालय की चोटी पर स्थित कैलास के स्वर्णोद्यान में शिवजी नृत्य-मग्न, देवता और गन्धर्व एकसाथ गा रहे हैं और सामने राजराजेश्वरी के रूप में देवीजी सिंहासन पर बैठी हुई हैं (कांगरा)—१८ ई०। चित्र, रंगा हुआ, १० × ८$\frac{3}{8}$″

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प० स० ३२६ 'तोड़ी' रागिणी का प्रतिरूप (राजस्थानी)—चित्र, रंगा हुआ, १२ × ७$\frac{3}{4}$″

प० स० ३३० सारंगी रागिणी का प्रतिरूप (जयपुर)—चित्र, रंगा हुआ, ११$\frac{3}{8}$ × ७$\frac{1}{8}$″

प० स० ४८५ पंखा हाथ में लिए एक सुन्दरी पशु-पक्षियों के एक दल के सामने खड़ी है (कांगरा)—पूर्व १९ ई० सदी। चित्र, रंगा हुआ, ६$\frac{5}{8}$ × ४″

प० स० १३२८२ कृष्ण-लीला कथा का एक दृश्य—श्री राधिका द्वारा श्रीकृष्ण को ताड़ना (कांगरा)—उत्तर १८ ई०। चित्र, रंगा हुआ, १०$\frac{3}{8}$ × ६$\frac{3}{8}$″

प० स० ५९६ शृंगार-रत एक रमणी (गुलेर-कांगरा)—लगभग १७७० ई०। चित्र, रंगा हुआ ७$\frac{1}{8}$ × ४$\frac{1}{2}$″

प० स० १४९५० भागवत से एक दृश्य—कृष्ण द्वारा गोवर्द्धन पहाड़ का उठाना (जयपुर)—पूर्व १९ ई०। चित्र, रंगा हुआ, १६ × ८$\frac{1}{2}$″

प० स० १४३१४ रागिणी सवरिकार का प्रतिरूप (जयपुर)—उत्तर १८ ई०। चित्र, रंगा हुआ, १०$\frac{1}{2}$ × ६″

प० स० २६७ होली उत्सव की व्याख्या (कांगरा)—उत्तर १८ ई०। शती। चित्र, रंगा हुआ, ११ × ७$\frac{1}{2}$″

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

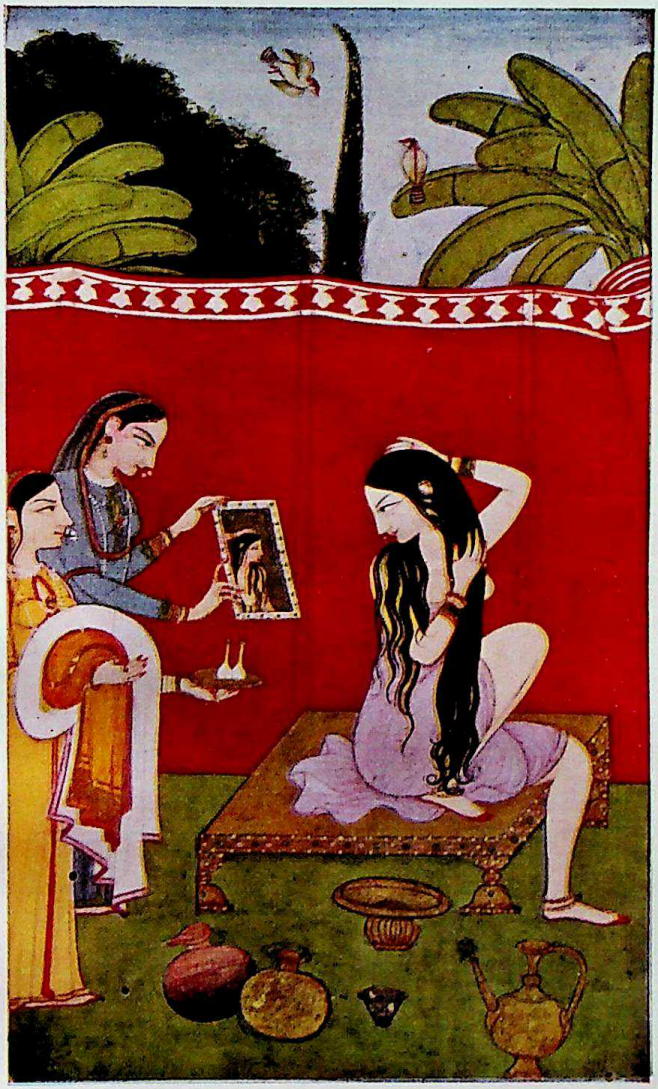

स्नान-शृंगार : कांगरा

CC-0. Agamnigam Digital Pr

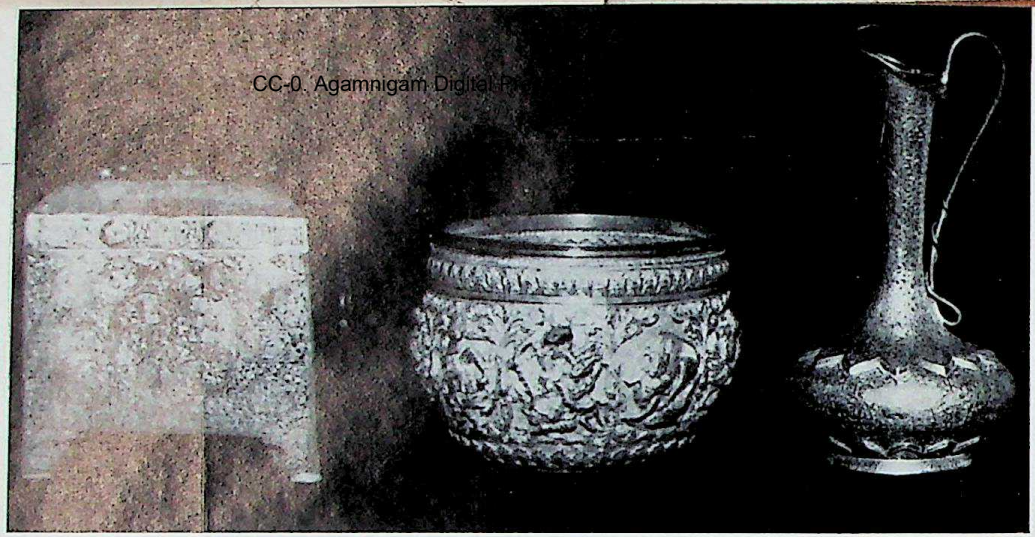

रजताधार

बुने हुए कपड़े व दूसरे शिल्प-वस्तुएँ

संग्रहालय के मुख्य भवन के चौरंगी संयोजित भाग के दोतल्ले में यह कक्ष स्थित है।

शिल्प-वस्तुएँ

तिब्बत, नेपाल व दक्षिण भारत की कई मनोहर धातु-मूर्तियाँ, तिब्बत व नेपाल से संग्रहीत धातु-निर्मित शास्त्रोक्त यन्त्र व सजे हुए टुकड़े, धातु के बने मीना किये हुए, बूटेदार (डीमसीड) तथा बिदरी के काम, चाँदी की सामग्रियाँ व छोटे-छोटे गहने, काँच व पत्थर की बनी वस्तुएँ, मिट्टी के बर्तन, हाथी-दाँत व हड्डी के बने विभिन्न काम, लकड़ी की बनी मूर्तियाँ एवं हाथी दाँत व धातु-खचित नक़ाशी की हुई लकड़ी की वस्तुएँ, चमड़े की सामग्रियाँ, मीना किये हुए खिलौने और 'जेड' नामक कीमती पत्थर तथा स्फटिक से बनी वस्तुएँ इस विभाग में देखने योग्य हैं; इन सब वस्तुओं से समस्त देश के विभिन्न प्रकार की शिल्प-कुशलता की धारणा हो जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

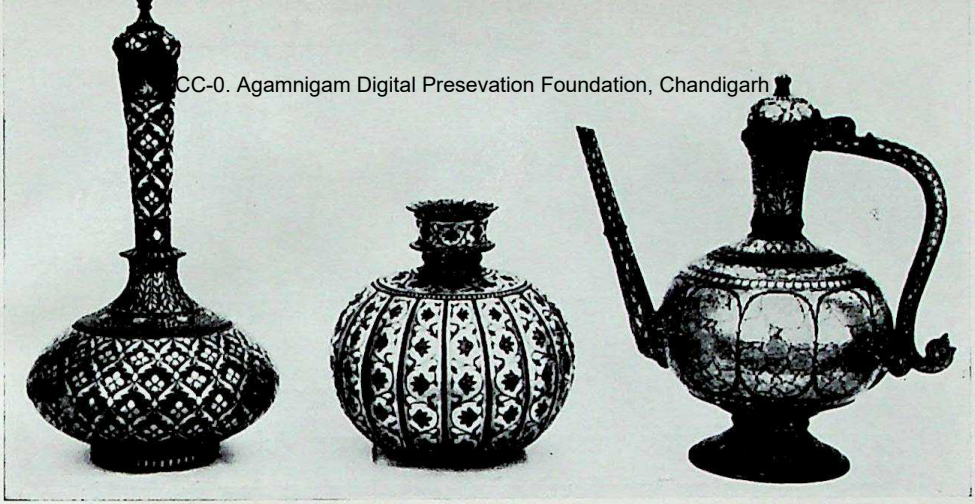

बिदरी-आधार

धातु-निर्मित कई मूर्तियों ने इस कक्ष की शोभा बढ़ा दी है। विभिन्न स्थानों से इनका संग्रह किया गया है एवं प्रत्येक मूर्ति में प्रतिमा-निर्माण-सम्बन्धी गुण तथा सौन्दर्य निखर आया है। धातु-निर्मित मूर्तियों के अलावा शास्त्र-पद्धति में बनी आवश्यक पीतल तथा ताम्र वस्तु व पात्रादि इस कक्ष की और एक विशेषता है। दक्षिण भारत की धातु-मूर्तियों के प्रतिरूप में एक काफी बड़े संग्रह ने इस कक्ष में एक विशेष स्थान अधिकार कर रखा है।

दमस्कस में उत्पादित (डोमसींड) एवं कड़े छिलके से ढके हुए पण्य-द्रव्यादि

इस काम में मुख्यतया एक धातु का पृष्ठ भाग दूसरे धातु से अलंकृत किया जाता है। तलवार व ढाल को अलंकृत करने के काम से ही बूटेदार बनाने का काम अपनाया गया है। इस शाखा के कई प्रकार की सामग्रियां इस कक्ष में प्रदर्शित की गयी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मीना के काम किये हुए (एनामेल), नीलो व बिदरी के पण्यद्रव्य

सुगन्ध रखने का पात्र, बर्तन, हुक्के के नीचे का भाग, एवं गहनों के रूप में काश्मीर, जयपुर, मुलतान तथा लखनऊ के मीना के काम किये हुए (एनामेल) बहुत-से पण्य-द्रव्य इस कक्ष में रखे गये हैं। इनके अलावा रेंगुन के 'नीलो' के काम किये हुए द्रव्यों के साथ प्रतापगढ़ के आधा-मीना किये हुए कई नमूने भी इस कक्ष के विशेष आकर्षण हैं।

बिदरी भी डीमसींड की तरह एक प्रकार का बूटेदार काम है और मीना किये हुए काम के बाद इसे ही भारत के सर्वोत्तम अलंकृत काम माना जाता है। बिदर, लखनऊ, पंजाब, मुर्शिदाबाद इसके मुख्य निर्माण-केन्द्र हैं। डीमसींड की भांति इसमें भी चाँदी से इसका पृष्ठभाग अलंकृत किया जाता है परन्तु जिस धातु के ऊपर कारीगरी का काम किया जाता है उस धातु में शुद्ध लोहा या फौलाद की जगह कम मूल्यवान धातुओं की मिलावट होती है। मुरादाबाद में इस प्रकार का जो काम होता है वह मुरादाबाद-बिदरी कहलाता है। फूलों की उभरी हुई नक़ाशी में इन पात्रों के ऊपरी भाग की खुदाई या छेद करना इस काम की विशेष विधि है। इसके बाद लाल या काले रंग की लाह को गर्म करके निम्न स्थानों में भर दिया जाता है। इस तरीके से जब सारा काम पूरा हो जाता है तो पृष्ठभाग में एक बहुत ही सुन्दर नक़ाशी नज़र आती है। बिदरी के इन दोनों प्रकार की वस्तुएँ इस कक्ष में प्रदर्शित की गयी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीली-आधार

भारत के विभिन्न स्थानों से संग्रहीत विचित्र ढाँचे तथा आकार के चमकीले, न-चमकाए-हुए एवं चित्रित मिट्टी के पात्रों का एक मूल्यवान संग्रह इस कक्ष में रखा गया है।

हाथी-दाँत (आइवरी) व सींग के बने हुए द्रव्य भी इस कक्ष में प्रदर्शित किये गये हैं। देहली, मुर्शिदाबाद, रंगुन, सिलट तथा आगरा के हाथीदाँत निर्मित जो विभिन्न सामग्रियाँ हैं उनमें से सुन्दर कारीगरी के काम किये हुए पंखे, पेटियाँ व मूर्तियाँ प्रधान हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

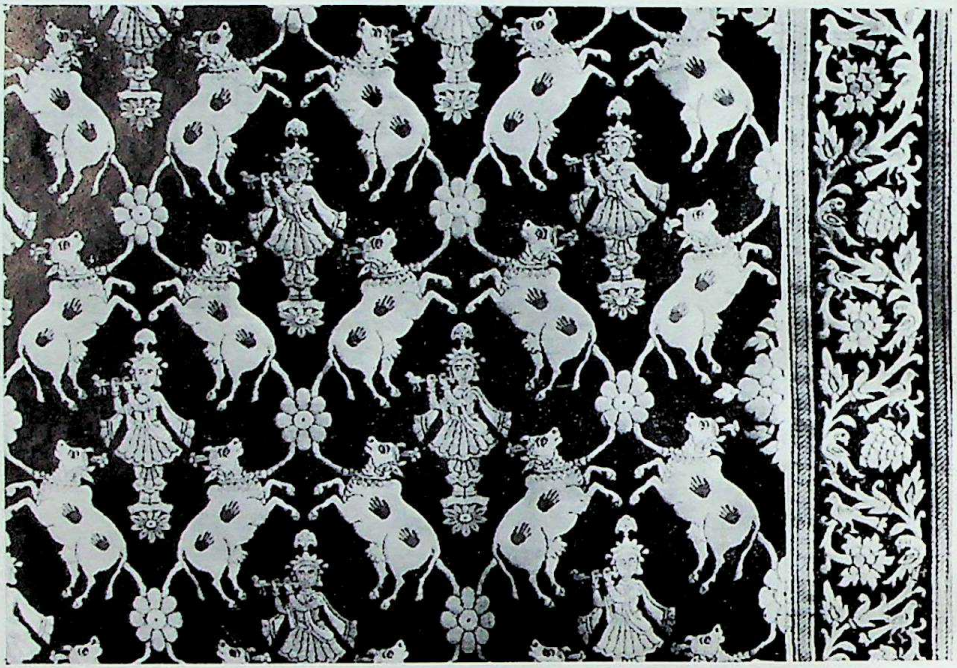

ब्रोकेड बनारसी-ढाचा

लकड़ी की व लकड़ी पर खोदी हुई वस्तुओं में काठियावाड़ के एक सुन्दर भवन का सन्मुख-भाग, लकड़ी पर खोदी गयी हिन्दू-कला का यथार्थ प्रतिरूप, रेंगून से नक़ाशी की हुई लकड़ी के बने मन्दिर का एक भाग, किसी मन्दिर का लकड़ी का बना हुआ ओसारा और नेपाल की खोदी हुई खिड़कियाँ उल्लेखनीय हैं। खोदी हुई मूर्तियों तथा नक़ाशियों के अलावा हाथी दाँत, अस्थि, धातु-निर्मित, सूता आदि के साथ लकड़ी के बने हुए द्रव्यों पर पच्चीकारी का काम किया गया है। पेटियाँ, अलगानेवाले पर्दे तथा घर के कामों में आवश्यक वस्तुएँ इस कक्ष की और एक विशेषता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वस्त्रांकन-ढाँचा

बुने हुए कपड़ों का विभाग

इस विभाग का संग्रह बहुत ही मूल्यवान है और इस स्थान में इकट्ठी की हुई चीज़ों से भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों के बुने हुए कपड़ों के शिल्प के उन्नति-क्रम तथा उनकी अपनी-अपनी विशेषताओं को अच्छी तरह समझा जा सकता है। जो वस्तुएँ इस कक्ष में प्रदर्शित की गयी हैं उन्हें साधारणतया तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

(१) करघों पर कसीदे किये हुए कपड़े
(२) हाथ से कसीदे किये हुए कपड़े और
(३) छापे हुए कपड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करघों पर कसीदे किये हुए कपड़ों में बनारस, सुरत व औरंगाबाद के 'किंखाब' या सुनहले व चाँदी के डोरे से बने हुए बूटेदार रेशमी कपड़े सबसे पहले देखने योग्य हैं। लखनऊ, गुलबर्ग, औरंगाबाद व हैदराबाद के चौंधानेवाले सुनहले रंग के कसीदे किये हुए मखमल ने, जो देशी-राज्य के कीमती छाते, हाथी के पोषाक व घोड़े के ओढ़ने के चँदवे के रूप में व्यवहृत होते थे, इस कक्ष की शोभा और भी बढ़ा दी है।

बूटेदार रेशमी साड़ी व चोली के अलावा सुनहले व चाँदी के डोरे वाले बूटेदार रेशमी अचकन इस कक्ष की उल्लेखनीय वस्तुओं में से है।

कसीदे किये हुए सुनहले व चाँदी के डोरे के बदले में शुद्ध रेशम भी इस्तेमाल होता था एवं हिमरु व अमरु के कई कामों में तथा मुर्शिदाबाद के बूटेदार रेशम के चित्ताकर्षक कामों में यह विशेषता पायी जाती है। इस कक्ष में प्रसिद्ध 'जामदनी' साड़ी व 'मसलिन' का एक अच्छा संग्रह है। टर्वनियर के विवरण से हमें मालूम होता है "पहले ढाका में एक ऊँचे दर्जे का मसलिन तैयार होता था, इसे भिगोकर यदि घास पर रखा जाता था तो बाहर से इसे नज़र करना मुश्किल होता था और देखने में शाम के ओसकण से इसका कोई अन्तर न था और जभी तो इसे "शबनम" या स्वायंकाल के ओसकण कहते थे। यह दूसरे एक प्रकार का होता था जो "अब्रयान" के नाम से परिचित था, "जिसका अर्थ है 'बहता हुआ पानी' क्योंकि पानी में रखने से यह नज़र नहीं आता था।"

जो मसलिन कक्ष में प्रदर्शित किये गये हैं उनमें से सिर्फ दोनों का वजन व नाप नीचे दिया जा रहा है जिससे हम मसलिन सूते की सूक्ष्मता को जान सकेंगे :—

प० स० १२८३३ मसलिन का टुकड़ा ५७′४″ × २′१०″, वजन ६.८ आउन्स
प० स० १२८३५ मसलिन का टुकड़ा ५६′ × २′१०″, वजन ७ आउन्स

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

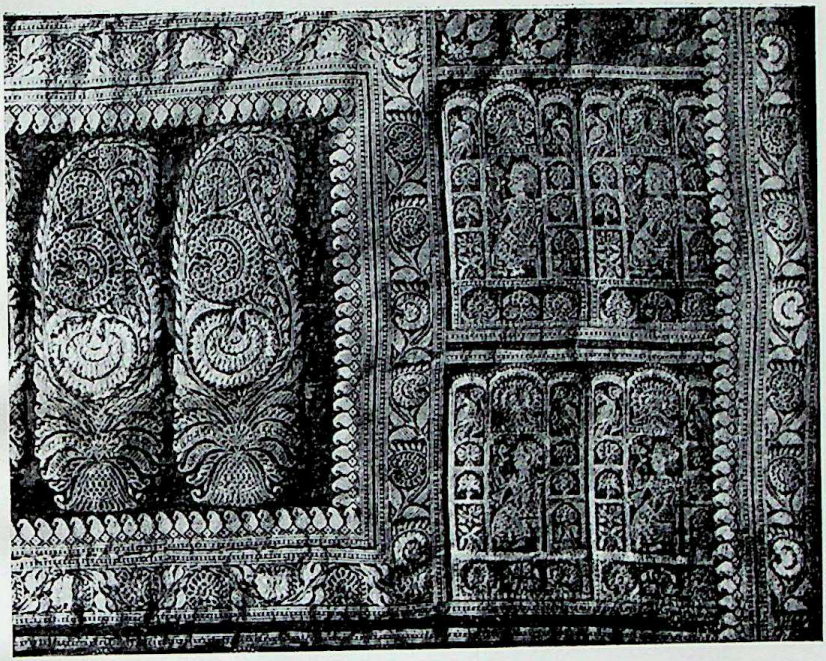

बालुचर-साड़ी

इस कक्ष में 'जामदनी' के कई प्रकार की नक़ाशियाँ देखने को मिलेंगी। जैसे—बुने हुए कपड़ों पर जब फूलों को चूर्ण करके इस्तेमाल किया जाता है तब उसे 'बूटेदार' कहते हैं, जब टेढ़े रूप में पेटर्न या नक़ाशी का कुछ अंश नज़र आता है तो उसका नाम 'टेरचा' रखा जाता है, और जब इसे बुना-हुआ जाल जैसा मालूम होता है तो वह 'जालदार' कहलाता है। उन सब बुने हुए कपड़ों को 'पन्ना-हज़ार' (एक हज़ार पन्ना) कहते हैं जब कि बूटेदार नक़ाशीदार कपड़ों पर एक के साथ दूसरे आपस में जोड़े हुए से मालूम पड़ते हैं। ये सब नमूने ही कक्ष में प्रदर्शित किये गये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कसीदे किये हुए कपड़ों के संग्रह में पंजाब का 'फूलकारी' काम, लम्बे-लम्बे साटन की सिलाई, एवं छोटे-छोटे काँच के साथ सिकड़ी जैसा सियन किया गया काठियावाड़ का तोरण व 'चाकला', मनोहारी रंग के रेशम के साथ सूती के कपड़े पर काम किये गये चम्बे के रुमाल, टोपी की लेस के रूप में लखनऊ के 'चिकन' का काम, सुनहले तार की अंगूठी के भीतर गोबरैले के पर लगाया हुआ मद्रास के सफेद या काले रंग के कसीदे किये हुए जाल, भारत के विभिन्न स्थानों के कसीदेदार सूजनी (बिस्तरे का ढकना) एवं जाकिट (मिर्जई) और काश्मीर का विख्यात शाल देखने योग्य हैं। इनके अलावा पालघाट व तीनेवेली का ग़लीचा, दरी या शतरंजी (सूत का कम्बल) इस कक्ष के विशेष आकर्षण हैं।

भारत के जुलाहों के धन्धों में काश्मीर का शाल और ढाका का मसलिन सबसे मशहूर हैं। काश्मीरी शाल का काम दो तरीकों से होता है—तिल्ली अथवा कानीकर और अमलीकर। पहले करघों पर नक़ाशियों को अच्छी तरह फैला दिया जाता है एवं दूसरे में सूई द्वारा नक़ाशियों को बनाया जाता है। असल में कानीकर व अमलीकर इन दोनों तरीकों की मिलावट से काश्मीरी शाल का निर्माण होता है। इन दोनों काम के कई नमूने इस कक्ष में प्रदर्शित किये गये हैं।

करघे छोड़कर कसीदे किये हुए व गहरी छाप से बुने हुए कपड़े कई कुशल विधियों से तैयार होते हैं।

कसीदे के काम के अलावा जिन दूसरे तरीकों से बुने हुए कपड़े अलंकृत किये जाते हैं वे नीचे दिये जा रहे हैं :—

(१) गहरी छपाई
(२) गिरहे डालकर रंगने का काम (रंजन प्रणाली)
(३) पूर्व-अनुमित नक़ाशी के अनुसार करघों पर नक़ाशियों को फैलाकर लम्बे या तिरछे रूप से खींचकर डोरों को अलग रंगना।

उपरोक्त तीन तरीकों के विभिन्न नमूने इस कक्ष में सजाये गये हैं। तीसरे तरीके के बुने हुए कपड़ों को 'पटोला रेशम' या 'शादी की साड़ी' कहते हैं। इस शिल्प में गुजरात के जुलाहों का एकाधिकार है। यह धन्धा बहुत पुराना है एवं दसवीं सदी के उपाख्यानों में भी इसका उल्लेख मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

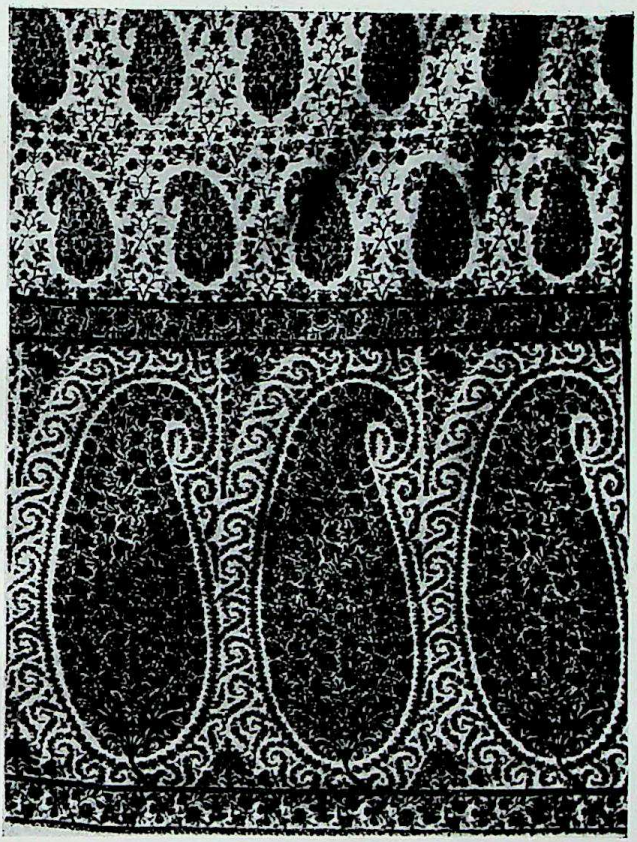

काश्मीरी-शाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय संग्रहालय का इतिहास

भारतीय संग्रहालय को १७८४ ई० में प्रतिष्ठित एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगल की औलाद जैसा माना जाता है। १७९६ ई० में सोसाइटी के सन्मुख पुरानी वस्तुओं को एकत्रित तथा उनकी रक्षा करने का प्रश्न उठ खड़ा हुआ; परन्तु सन् १८१४ के पहले तक सोसाइटी अपने इलाके में एक संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय नहीं कर सकी। केवल दो विभागों को लेकर संग्रहालय की नींव डाली गयी--(क) पुरातत्व, चरित्र-शास्त्र व प्रयोगित-विज्ञान सम्बन्धी विभाग और (ख) भूतत्व तथा प्राणि-विद्या सम्बन्धी विभाग।

१८३५ ई० में देश के खनिज पदार्थों के साधनों की उन्नति के प्रति सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया एवं लगभग १८४० ई० तक सोसाइटी के कक्षों में अर्थसम्बन्धी भूतात्विक विभाग का संग्रहालय खोला गया। १८५६ ई० तक अर्थ-सम्बन्धी भूतात्विक विभाग सोसाइटी के भवन में ही चालु रहा। इस संग्रह का जो हिस्सा भारत सरकार का था उसी वर्ष १ नं० हेस्टिंगस स्ट्रीट पर स्थापित भारतीय भूतात्विक विभाग के साथ रखने के लिए उस हिस्से का स्थानान्तरण किया गया। इस स्थानान्तरण के कारण जो अंश खाली हुआ उसी अंश में पुरातात्विक व प्राणि-विद्यागत विभागों की वस्तुएँ प्रदर्शित करने का प्रबन्ध किया गया।

कुछ दिन बाद मालूम हुआ कि सोसाइटी के पास जो सीमित जगह व रक़म है उससे सोसाइटी के कक्षों में संग्रहालय की आगे की उन्नति सम्भव नहीं होगी। १८५८ ई० में सोसाइटी के सदस्यों ने शहर में एक राष्ट्रीय संग्रहालय स्थापित करने का प्रस्ताव भारत सरकार के पास भेजा जहाँ ग्रंथागार को छोड़कर सोसाइटी के बाक़ी संग्रह का स्थानान्तरण करने की सोची गयी। फलस्वरूप, १८६५ ई० में यह तय हुआ कि एशियाटिक सोसाइटी के प्राणिविद्या, भूतत्व तथा पुरातत्व विभागों के संग्रह को प्रस्तावित भारतीय संग्रहालय के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीस (न्यासधारी मंडल) के आधीन स्थानान्तरित किया जायगा एवं संग्रहालय के भवन में सरकार सोसाइटी को स्थान का प्रबन्ध कर देगी। १८७४ ई० में एशियाटिक सोसाइटी के कक्षों में जो संग्रह इकट्ठा किया गया

CC-0. Agam... Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लकड़ी की बनी मूर्ति

धातु की बनी मूर्ति

लकड़ी की बनी मूर्ति

१८७५ ई० में संग्रहालय के भवन में उसका स्थानान्तरण हुआ। इसके कुछ दिन बाद सोसाइटी को मालूम हुआ कि संग्रहालय भवन को अपने अधिकार में लाना या अपने पुराने भवन को छोड़ देना कोई भी काम उसके लिए उचित नहीं होगा और १८७८ ई० में मैदान की उल्टी तरफ़ इस चित्ताकर्षक भवन का निर्माण हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पद्मपाणि (सुनहला) : तिब्बत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुद्ध (सुनहला) : तिब्बत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतने में सन् १८७२ में डालहौसी स्कवार से मिला हुआ कस्टम हाउस के गोदाम में बेंगल इकनमिक संग्रहालय की स्थापना हुई। १८७९ ई० में जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अपने दफ्तर के लिए इस स्थान की ज़रूरत हुई तब १२ नं० हेस्टिंगस स्ट्रीट में वहाँ के संग्रहालय का स्थानान्तरण किया गया, लेकिन संग्रहालय की आगे की उन्नति के लिए यह स्थान काफ़ी नहीं था। कुछ दिनों के लिए प्रदर्शनी को बन्द रखा गया, फिर १८८२ ई० में जनसाधारण के लिए यह खोला गया। सन् १८८३ ई० की ४ जुलाई को कलकत्ता अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी की जिस कामेटी की स्थापना की गयी, उसने भारत सरकार से स्थानिक संग्रहालय के विराट संग्रह तथा विभिन्न स्थानों से संग्रहीत वस्तुओं का अधिकार प्राप्त किया। १८८४ ई० में जब प्रदर्शनी बन्द हो गयी तो अस्थायी रूप से कई आच्छादित गोदामों में अर्थसम्बन्धी चीज़ों को इकट्ठा किया गया।

सन् १८८२ में बंगाल सरकार को साडर स्ट्रीट की तरफ़ संग्रहालय के एक अंश को बढ़ाने की सूझी और १८८८ ई० में यह काम आरम्भ होकर १८९१ ई० में समाप्त हुआ। इसके बाद १९०१ ई० में जनसाधारण के लिए इकॉनमिक कोर्ट (अर्थसम्बन्धी संग्रह) का कक्ष खोला गया।

१८७४ ई० में तत्कालीन बड़ेलाट साहब नर्थ ब्रुक ने पहले-पहल चित्र-प्रदर्शन के एक अलग कक्ष की स्थापना करने का ज़िक्र किया; उसी साल कलकत्ते में ललित-कला प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि इस शहर में स्थायी रूप से कला-विभाग का एक कक्ष स्थापित करना बहुत ही ज़रूरी है। बंगाल के तत्कालीन लाट साहब सर रिचर्ड टेम्पल ने यह काम शुरू किया। और जिसके फलस्वरूप गवर्णमेण्ट स्कूल ऑफ आर्ट (सरकारी कला विद्यालय) के सटे हुए स्थान में तीन मकान (बहुबाज़ार में बैठकखाने के पास) लिये गये और जिन्हें कला-वस्तुएँ रखने का केन्द्र बनाया गया। इस प्रकार कला-विद्यालय के संस्पर्श में जिस कक्ष की स्थापना हुई सन् १८७६ ई० की छः अप्रेल को लार्ड नर्थब्रुक ने उसका उद्घाटन किया।

१९०५ ई० में सरकारी कला विद्यालय के तत्कालीन अध्यक्ष स्व० ई० बी० हेवेल ने सरकार को इस बात पर प्रोत्साहित किया कि वह विद्यालय के संग्रहीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजनन्दिनी : पारसिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यूरोपियन (प्रतीच्य) चित्रों को बेंचकर उससे प्राप्त रक़म से भारतीय मूर्ति व चित्र ख़रीदने का प्रबन्ध करे। इसी प्रकार कलकत्ते में वर्तमान कला-विभाग के कक्ष (आर्ट-गैलरी) की स्थापना हुई। तदन्तर आर्ट वैर कोर्ट (कला-सामग्रियों के लिए घेरा हुआ स्थान) और आर्ट कलेक्शन (कला-संग्रह) कला-विद्यालय की वस्तुओं के साथ रखा गया। इकट्ठा किया हुआ यह संग्रह सरकारी कला विद्यालय (वर्तमान में जो गवर्णमेण्ट कालेज ऑफ आर्ट एण्ड क्रैफ्ट' नाम से परिचित है) के अध्यक्ष के आधीन संग्रहालय के मुख्य भवन के चौरंगी संयोजित अंश में रखा गया।

अभी संग्रहालय के छः विभाग हैं:--पुरातत्व, कला, नृतत्व, भूतत्व, प्राणि-विद्या एवं वनस्पति-विज्ञान को लेकर उद्योग विभाग और विभिन्न विभागों के समपदीकरण के लिए ट्रस्टी-बोर्ड के द्वारा इनका नियन्त्रण होता है।

* *

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh